SHRI SAMAR GUHA : Sir it has not been reported....

MR. SPEAKER : I am not going to allow it. We shall discuss what should be done.

SHRI NAMBIAR : It is the Negroes and blackmen who are being hanged, Sir.

---

16·53 hrs.

## DEMANDS FOR GRANTS (RAILWAYS) 1968-69 AND DEMANDS FOR SUPPLEMENTARY GRANTS (RAILWAYS), 1967-68—*Contd.*

**श्री नाथूराम अहिरवार** (टीकमगढ़) : अध्यक्ष महोदय, आज जो रेलवे बजट सदन के सामने प्रस्तुत है, मैं उस का समर्थन करने के लिये खड़ा हूं। अभी कई माननीय सदस्यों ने रेलवे के ऊपर प्रकाश डाला और हर वर्ष हम यह देखते हैं कि रेलवे में घाटा बढ़ता चला जा रहा है और उसकी वजह से भाड़ा बढ़ाया जाता है— पैसेन्जर्स का और माल का। लेकिन हम कभी इस बात पर गौर नहीं करते हैं कि यह घाटा क्यों होता है, इसकी बुनियाद में क्या खामी है, इसका मूल कारण क्या है— इस दृष्टि से हम इस पर विचार नहीं करते।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक ऐसे क्षेत्र से आता हूं, एक ऐसे प्रांत से आता हूं जो देश का मध्य कहलाता है। जैसे शरीर में पेट होता है, अगर पेट भूखा रहे तो शरीर स्वस्थ नहीं रह सकता। मध्य प्रदेश एक ऐसा प्रांत है, जहां पर सब प्रकार के रिसोर्सेज हैं—मिनरल्ज हैं, लोहा है, कोयले का भंडार है, ऐसी नदियां हैं, जहां विद्युत उत्पन्न की जा सकती है, जिन से देश का बाहरी विकास हो सकता है, लेकिन मुझे दुख है कि जहां देश के अन्य क्षेत्रों में रेलों का जाल बिछा हुआ है, वहां मध्य प्रदेश में रेल एक इस किनारे से निकाली गई है और एक दूसरे किनारे से निकाली गई है, लेकिन जहां पर कोयले का भंडार पड़ा हुआ है, वहां पर कोई रेलवे लाइन नहीं है। जैसे बस्तर के क्षेत्र को ले लीजिये—वह ऐसा क्षेत्र है जहां पर लोहे का 150 मील लम्बा पहाड़ पड़ा हुआ है, हमारी राज्य सरकार बहुत समय से वहां पर रेलवे लाइन की मांग कर रही है कि वहां पर रेलवे लाइन डालकर उस क्षेत्र को एक्सप्लायेट किया जाय, ताकि वहां पर लोगों को रोजी मिले और उस क्षेत्र का विकास हो।

इसके साथ ही साथ मैं माननीय मंत्री जी का ध्यान बुन्देलखंड क्षेत्र की ओर भी दिलाना चाहता हूं, जो मध्य प्रदेश का उत्तरी हिस्सा है तथा पिछले सत्र में मैंने एक प्रश्न भी किया था, जिसके उत्तर में माननीय मंत्री जी ने बताया था कि ललितपुर-टीकमगढ़-छतरपुर-पन्ना से सतना तक की रेलवे लाइन की एक योजना शासन के विचाराधीन है, लेकिन अर्थ के अभाव में अभी हम उस योजना को ले नहीं सकते। मुझे समझ में नहीं आता है कि जब दिल्ली के चारों ओर एक रेलवे लाइन इस लिये बना रहे हैं कि कर्मचारी लोग अपने दफ्तरों में काम करने आ सकें, तो दूसरी ओर जहां काफी तादाद में सबजियां, ईमारती पत्थर, जंगलात की लकड़ी आदि सामान पैदा होता है, उस क्षेत्र का विकास सरकार क्यों नहीं करना चाहती। वहां पर गरीबी इस लिये बढ़ रही है कि आज तक उस क्षेत्र का विकास नहीं किया गया है। अगर वहां पर रेलवे लाइन बना दी जाय, तो उससे वहां का व्यापार बढ़ेगा, लोगों को रोजी-रोटी मिलेगी, उस क्षेत्र का विकास होगा। इस लिये वहां पर रेलवे लाइन का होना अत्यन्त आवश्यक है, लेकिन हमारी सरकार जो समाजवाद का नारा लगाती है— लेकिन वास्तव में हम देखते हैं कि शहरों को स्वराज्य मिल रहा है, देहाती क्षेत्र बराबर पीछे पड़ते जा रहे हैं। कहीं भी देख लीजिये— फरीदाबाद में जाइये, पूरा औद्योगीकरण हुआ है। लेकिन हमारे यहां एक इलेक्ट्रिसिटी कम्पनी को लाइसेन्स दिया गया है, उस का बोर्ड वहां पर लगा हुआ है और उस को जो जमीन एक्वायर कर के दी गई है, उस में कारखाना खोलने के बजाय गेहूं की खेती हो रही है।

किसानों को थोड़ा पैसा देकर जमीन ले ली है और उस से पैदा कर रहे हैं। मैं चाहता हूं कि ऐसे क्षेत्रों में कारखाने खोले जायं, जहां बंजर जगहें हैं, जहां पहाड़ी इलाके हैं तथा उन क्षेत्रों की तरक्की और विकास के लिये रेलवे लाइनें डाली जायं।

हमारे यहां एक निवाड़ी रेलवे स्टेशन है—हमारे टीकमगढ़ जिले ने एग्रीकल्चर में इस साल इतनी उन्नति की है कि 12 हजार टन फर्टिलाइजर हमारे यहां इस्तेमाल किया गया है, 60 हजार एकड़ भूमि में हमारे यहां मैक्सिकन गेहूं बोया गया है—यह सब काम निवाड़ी स्टेशन से हुआ है, लेकिन इस स्टेशन का प्लेटफार्म इतना नीचा है कि डिब्बे की जो सीढ़ी होती है, उससे भी नीचा है, रोजाना बुड्ढे मर्द और औरतें, बच्चेवाली औरतें, बीमार आदमी गाड़ी से गिर जाते हैं। मैंने मालूम किया था—500 पैसेन्जर्स वहां रोज आते जाते हैं, केवल दो टाइम रेलगाड़ी आती है, एक सुबह और दूसरी शाम को, रात को जो पैसेन्जर्स मोटरों से आते हैं, उन को कोई गाड़ी नहीं मिलती है, रात को दो-दो सौ पैसेन्जर्स वहां पर पड़े रहते हैं, वेटिंग रूम को तो थोड़ा आपने बढ़ा दिया है, लेकिन वहां पर पानी की कोई व्यवस्था नहीं है। एक तरफ बरुआसागर में तो आप पच्चीस हजार रुपये लगा कर फ्लश की लैट्रीन्ज़ बना रहे हैं, जब कि लोगों के रहने के लिये वहां क्वार्टर्स नहीं हैं, चूंकि कांट्रेक्टर्स को पचास प्रतिशत मुनाफा होता है, इसलिये ऐसी बात हो रही है। एक तरफ आप सुविधायें देने के लिये किराये बढ़ाते हैं, लेकिन दूसरी तरफ शायद चार-छः नौकर होंगे जिनके लिये आप ये फ्लश की लैट्रीन्ज़ बना रहे हैं। जहां पर 500 पैसेन्जर्स रोजाना आते हैं, उनकी सुविधा के लिये दो-चार हजार रुपये प्लेटफार्म को ऊंचा करने के लिये खर्च नहीं कर सकते—ऐसा नहीं होना चाहिये। वहां पर इतना माल आता है—पूरे इलाके भर की सब्जियां वहां से ट्रकों में लद कर बम्बई और सूरत भेजी जाती हैं। दालें आती हैं, अदरख, घुइयां आदि बहुत सा सामान आता है, जब लोग वहां पर माल लेकर जाते हैं, सब्जी तुलवाते हैं तो स्टेशन मास्टर एक बोरे का एक रुपया लेता है। अगर आप भी भेस बदल कर वहां जायें, तो आपसे भी एक रुपया मांगेगा, 100—200 बोरा रोज वहां से लदता है, इस तरह से सौ—सौ रुपया उनकी जेब में जाता है, अगर नहीं देते तो माल बुक नहीं करते। मजबूर हो कर उन लोगों को माल ट्रकों से भेजना पड़ता है और ट्रकवाले उनका माल वहां से उठा कर सही स्थान पर भेज देते हैं। वास्तव में हम गहराई में नहीं जाते हैं कि घाटा किस कारण से हो रहा है। जनरल मैनेजर साहब ने एक मर्तबा लिखकर दे दिया तो फिर रेल मंत्रालय पोस्ट आफिस की तरह से काम करता है। कम से कम आप यह तो सोचें कि वहां की जनता की सुविधा के लिए क्या चाहिए। चूंकि एक मर्तबा जनरल मैनेजर साहब ने लिखकर दे दिया कि अन-इम्पार्टेन्ट स्टेशन है तो फिर आप फैसले को बदल नहीं सकते। प्राण जांहि पर वचन न जाहीं। फाइल काफी मोटी हो गई है। आप उस प्लेटफार्म को ठीक करा दीजिए।

**17 hrs.**

चूंकि मेरे गांव के पास से रेलवे लाइन निकली है इसलिए मैं बचपन से देख रहा हूं। हजारों आदमियों के गैंग लगे रहते हैं। पी०डब्लू०आई० का हर मजदूर से 12 रुपया बंधा रहता है। दो रुपया मेट लेता है और 10 रुपए पी०डब्लू०आई० के पास जाते हैं। एक दिन में एक मजदूर को आप एक रुपया 75 पैसे देते हैं। इस प्रकार की बातें होती हैं। मानिकपुर से झांसी के लिए जो गाड़ी आती है वह रोजाना झांसी के आउटर स्टेशन पर एक घंटा खड़ी रहती है। जो बिना टिकट पैसेन्जर्स होते हैं वे उतर जाते हैं, उनको कोई पकड़ने वाला नहीं है। बांदा से लोग गल्ला लेकर आते हैं और उतर कर चले जाते हैं। तो मैं आपसे निवेदन करना चाहता

[श्री नाथूराम अहिरवार]

हूं कि आप नेवाड़ी स्टेशन के प्लेटफार्म को ऊंचा करा दीजिए और गुड्स की साईडिंग बना दीजिए। मजदूरों की जो समस्यायें हैं उनको दूर कीजिए। रेलवे कर्मचारियों को इंक्रीमेन्ट्स नहीं मिलते हैं। एक पर्सनल विभाग है, उसके इस्टैवलिशमेन्ट क्लर्क से सौदेवाजी होती है। अगर किसी के 500 रुपए इंक्रीमेन्ट के रहते हैं तो वह कहता है 200 दे दीजिए तो आपको तुरन्त मिल जाएगा। इसी तरह से अगर कोई मेडिकल छुट्टी पर चला जाय तो उसको पे स्लिप नहीं मिल पाती है। इसलिए आप भेष बदल कर दफ्तर में जायें और देखें कि रेलवे विभाग में क्या गोल-माल होता है। कानपुर से व्यापारी आते हैं और टूट वाले वैगन्स को कम दाम पर उनके हाथ बेच दिया जाता है। इन सारी बातों की जानकारी मंत्री महोदय करेंगे और ऐक्शन लेने की कृपा करेंगे।

इन शब्दों के साथ में आपकी मांग का समर्थन करता हूं।

**श्री अब्दुल गनी दार** (गुड़गांव) : जनाब स्पीकर साह्व, मैं खुश होता अगर हमारे रेलवे मिनिस्टर साहब ऐसी सूरत में घाटा दिखाते कि जब पाकिस्तान ने काश्मीर में हम पर सन् 1965 में हमला किया तो उस वक्त रेलवे के वहां न होने की वजह से बड़े टैंक नहीं ले जाये जा सके और उसमें काफी तकलीफ हुई--अगर इस तरफ ध्यान दिये होते और उस में रुपया खर्च होता और उसकी वजह से घाटा हुआ होता तो मैं खुशी से उसको कुबूल करता। मधोक साहब जैसा कि कहते हैं कि फिर खतरा है और इंदिरा जी ने कल जवाब दिया कि शेख अब्दुल्ला के कहने पर उन्हें बड़ा रंज है, तो फिर जब खतरा है तो रेलवे मिनिस्टर साहब को देख लेना चाहिये कि आया वहां पर टैंक जा सकेंगे या नहीं। वैसे तो हमारी प्राइम मिनिस्टर ने कह दिया कि हम पहले से ज्यादा मुंहतोड़ जवाब देंगे लेकिन बातों से तो जवाब होता नहीं। कोई ऐसी बात न हो कि मुश्किल हमारे सामने आये। हमारे मरहूम पंडित जी ने कहा था कि धक्के मार कर चीनियों को निकाल दो, लेकिन ताकत तो थी नहीं, हमारे अफसर और सिपाही पीछे भागे। एक-एक दिन में 60 मील पीछे आये। अगर रेलवे मिनिस्टर साहब इस तरफ देखें कि मुल्क में डिफेंस के लिये कहां-कहां बार्डर के साथ-साथ रेलवे को बढ़ाना है तो मैं समझता हूं ज्यादा अच्छा होगा।

**17.05 hrs.**

[MR DEPUTY-SPEAKER *in the Chair*]

दूसरी बात मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि हमारे रेलवे मिनिस्टर साहब ने--जैसा एक भाई ने कहा कि उन्होंने कभी मैप देखा नहीं होगा। मेरी कांस्टीचूएन्सी बिल्कुल दिल्ली के साथ लगती है। गुड़गांव कांस्टीचूएन्सी उसे कहते हैं। गुड़गांव से लेकर अलवर तक 80 मील का टुकड़ा है, इसके वाशिन्दों को रेलवे का एक इंच टुकड़ा भी नसीब नहीं हुआ। उन्हें अगर जाना होता है तो 30 मील एक तरफ स्टेशन है और दूसरी तरफ जाना होता है तो उधर भी 30 मील जाना पड़ता है। लेकिन कभी भी इस तरफ तवज्जह नहीं दी गई। बदकिस्मती से वहां जो लोग बसते हैं वे बैकवर्ड हैं, मुसलमान हैं। वे ज्यादा शोर नहीं करते, इस लिये वह 30 मील का टुकड़ा उसी तरह पड़ा हुआ है। अगर उस तरफ ध्यान दिया गया होता तो मैं बड़ा खुश होता।

डिप्टी स्पीकर साहब, बड़ी बदनसीबी की बात है कि जब भी फ्लड आया तो उसमें सबसे ज्यादा नुकसान गुड़गांव जिले को हुआ। उसका कारण यह था कि जो बेचारे मुसीबत में फंस गये उन के लिये रेल का कोई रास्ता नहीं और सड़क कोई चलती नहीं। इसलिये वे बिल्कुल तबाह और बरबाद हो गये। मैं समझता हूं कि रेलवे मिनिस्टर साहब इस तरफ जरूर तवज्जह देंगे।

एक बात मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि हिसार जिला में, जहां तक खुराक का

मसला है, उस में वह बहुत ही मददगार है। पहले उस में सब से कम पैदावार होती थी लेकिन अब हिन्दुस्तान के बेहतरीन खित्तों में वह एक खित्ता समझा जाता है। हिसार के लिये मैंने कई बार अर्ज किया कि अगर उसको रोहतक के साथ वजर्या रेल मिला दिया जाय, तो वह सीधे दिल्ली से मिल कर 50 मील का एरिया बड़ा मुफीद साबित होगा। रिवाड़ी की तरफ से रेल के जरिये करीब 100 मील सफर करना पड़ता है, चाहे गल्ले को लाना हो या इंसानों का आना-जाना हो, उस में भी बड़ी आसानी हो जायेगी।

अब देखना यह है कि हम इस बात के कहने में कहां तक हक़बजानिब हैं कि थर्ड क्लास के पैसेन्जर्स पर बोझा डालें अगर आप उन को कुछ आसानियां देते हैं तो फिर थर्ड क्लास पैसेन्जर्स यह समझ लेंगे कि अब हमारे मुल्क में न कोई फर्स्ट क्लास है और न कोई थर्ड क्लास है क्योंकि जैसे फर्स्ट क्लास वालों को आसानियां मुहिया हैं, थर्ड क्लास वालों को भी वही आसानियां मुहिया हैं। तब वह यकीनन पुनाचा साहब के शुक्रगुजार होंगे और समझेंगे कि देश में इंकलाब आया है। लेकिन सच्चाई यह नहीं है। सच्चाई यह है कि अगर थर्ड क्लास में घुसना हो तो काफी मुश्किल पड़ जाती है। इसलिये आप थर्ड क्लास वालों को ऐसी आसानियां दें कि वे आराम से सफर कर सकें और फिर आप किराया भी बढ़ा सकते हैं। वरना मैं आपके जरिये से अर्ज़ करना चाहता हूं कि आज की इस मुल्क की इकानामी को आप देखें। हमारा देश जो दुनियां में सोने की चिड़िया कहलाता था, जिसमें दूध और शहद की नदियां बहती थीं, उस की हालत आज क्या है। छोटे छोटे जो कमजोर मुल्क हैं, जैसे कि पाकिस्तान, जिसमें कोई इण्डस्ट्री नहीं, हमारे मुकाबले में वहां तरक्की के कोई जरिये नहीं, उसकी भी पर-कैपिटा इन्कम हमारे मुकाबले ज्यादा है। ऐसी सूरत में भी क्या हम हक़बजानिब हैं कि थर्ड क्लास पैसेन्जर्स पर बोझा डालें। किसी को सफर करने का शौक नहीं है। हमारे बुजुर्गों ने तो शायद रेल देखी भी नहीं थी। आज तो रोटी-रोजगार का मसला ऐसा टेढ़ा हो गया कि हर शख्स को सफर करना पड़ता है, भाग दौड़ करनी पड़ती है। अपने और अपने बच्चों की जिन्दगी को कायम रखने के लिये वह मजबूरन सफर करता है कुछ लोग शायद सैर करने के लिये सफर करते हों, लेकिन ज्यादातर वे ही हैं जो रोजी कमाने के लिये जाते हैं। दिल्ली की आबादी पहले साढ़े चार लाख थी, आज तीस लाख से ज्यादा हो गई है। यह क्यों हो गया है? वजह यह है कि यहां लोगों को रोज़ी, रोटी मिलती है और दूर-दूर से लोग आकर यहां बसते चले जाते हैं। लेकिन यह बात आप को ज़रूर महसूस होगी कि दिल्ली जोकि अब दूर-दूर तक फैल गयी है और 12, 12 मील के फ़ासले पर हम ने लोगों को आबाद कर दिया है उन के लिए ट्रान्सपोर्ट की माकूल सुविधा न होने से उन्हें कितनी मुश्किल होती होगी? मैं चाहूंगा कि हमारे रेलवे मंत्री महोदय इस ओर ध्यान दें और ट्रेनों वगैरह की माकूल व्यवस्था लोगों के लिए करें।

जहां ट्रेनों की रफ्तार बढ़ाने के बारे में सरकार क़दम उठा रही है वहां उसको इस तरफ़ भी ध्यान देना चाहिए कि थर्ड क्लास के मुसाफिरों को हम ज़रूरी सहूलियतें पहुंचायें। चूंकि अभी तक हम थर्ड क्लास के रेलवे मुसाफिरों को ज्यादा आसानियां नहीं दे पाये हैं इसलिए रेलवेज़ को कोई हक नहीं है कि उन का रेल का किराया वह बढ़ाये।

एक बड़े मशहूर शायर अल्लामा इक़बाल ने हिन्दुस्तान के ज़हन की तारीफ़ में यह कहा है : "शुकूहे तर्कमानी ज़हने हिन्दी नुत्के ईरानी।"

हिन्दुस्तान के जहन की तारीफ़ दुनिया के बड़े-बड़े लोगों ने की है और सारी दुनिया

[श्री अब्दुल गनी दार]

मानती है कि हिन्दुस्तान के जो बुजुर्ग थे उन्होंने बहुत पहले यह हवाई जहाज कहिये, कुछ कहिये, वह भारत का ज़माना या महाभारत का ज़माना कहिये, उस ज़माने में उन्होंने बड़ी तरक्की की थी। लेकिन आज जहां दूसरे मुल्कों में ट्रेनों की रफ्तार बहुत तेज़ है अपने देश में ट्रेनों की रफ्तार बहुत कम है। अगर कहीं उन्होंने रफ्तार तेज़ भी की है जैसे डीलक्स गाड़ी में तेज़ की है जोकि अमृतसर से वम्बई तक जाती है तो उस में मैं ने खुद सफर किया है और मैं उस की बाबत बतलाना चाहता हूं कि वह दिल्ली से 25 मील तक तो इतनी तेज़ी से आती है कि तकरीबन एक घण्टे में वह 40 मील से ज्यादा निकाल लेती है लेकिन सोनीपत से लेकर दिल्ली तक आने में उस की रफ्तार बहुत धीमी पड़ जाती है और उस बारे में अगर वह अपने अफसरान से रिपोर्ट तलब करें तो उन को पता चलेगा कि कई दफे डेढ़-डेढ़ घंटा उस रेलगाड़ी को सिर्फ इस 27 मील के टुकड़े को तय करने में लग जाता है। इतना टाइम क्यों लग जाता है? जाहिर हैं कि उस में कोई न कोई मिस्मैनेजमैंट है, खराबी है और मैं चाहता हूं कि मंत्री महोदय उधर ध्यान देकर उस खराबी को दूर करें।

जहां मैं ने यह ट्रेनों की रफ्तार के बारे में मंत्री जी का ध्यान दिलाया है वहां रेलवे बोर्ड की तरफ़ भी उनका ध्यान दिलाना चाहूंगा। रेलवे बोर्ड एक बहुत ताक़त वाला बोर्ड है। रेलवे बोर्ड को जरूरत है या नहीं यह पुनाचा साहब बेहतर जानें लेकिन हम देखते हैं कि आज इन के रेलवे के अफसरान इतने बेनियाज़ हो गये हैं कि कुछ कहना नहीं है। दूर न जाकर यहां दिल्ली में ही आप देख लीजिये कि जो गुड्स क्लर्क हैं कई तो 12, 12 साल से यहां लगे हुए हैं क्योंकि यहां पर ऊपर की आमदनी का बड़ा जरिया है और वह यहीं पर जमे रहना चाहते हैं। उन्हें कोई बदलने वाला नहीं है। कई रेलवे मुलाज़िम बड़ी परेशानी में और फिक्र में हैं। उन के मां बाप बूढ़े हों, अंधे हों, लूले हों, लंगड़े हों, वह अपील पर अपील कर चुके हैं लेकिन उन की कोई सुनवाई नहीं होती है।

आप सुन कर हैरान होंगे। एक छोटी सी बात मैं कहता हूं कि मैंने रेलवे के मिनिस्टर साहब को लिखा था कि फलां एक बेवा लड़की है उस को क्वार्टर नहीं मिला हुआ है और उसे आउट आफ़ टर्न पर क्वार्टर मिलना चाहिए। मुझे जवाब मिला कि नहीं ऐसा नहीं हो सकता है। हम चूंकि किसी को इस तरह नहीं देते इसलिए इसको भी नहीं दे सकते हैं। अब जिस बेवा लड़की के लिए मैंने लिखा था वह एक हिन्दू बेटी है लेकिन उन्होंने कह दिया कि हम उस के लिए कुछ नहीं कर सकते। इस पर मैंने उन्हें दुबारा लिखा कि तीन केसेज़ में इस तरीक़े से आप के वहां पर किया गया है। इस के बाद डिप्टी मिनिस्टर साहब ने मुझे लिखा कि हम उस के बारे में गौर करेंगे लेकिन अभी तक वह गौर ही चल रहा है और मामला वहीं का वहीं पड़ा हुआ है ...

**उपाध्यक्ष महोदय** : माननीय सदस्य का समय समाप्त हो रहा है।

**श्री अब्दुल गनी दार** : मैं आप का शुक्रिया अदा करता हूं कि आप ने मुझे टाइम दिया और मैं चूंकि हमेशा चेयर को ओबे करता हूं इसलिए फकत एक बात कह कर मैं अपनी जगह पर बैठ जाऊंगा।

मैं कहना चाहता हूं कि सिवाय इनकी नेकी के और कोई वजह इस के लिए नहीं हो सकती है। बिला शक़ मंत्री महोदय नेक आदमी हैं। पहले वाले रेलवे मिनिस्टर्स मसलन पाटिल साहब और दीगर मिनिस्टर्स होशियार शख्स थे और वह शायद गरदन भी पकड़ते होंगे और वहां किसी को फ़ायदा पहुंचाना चाहते होंगे फ़ायदा पहुंचाते होंगे लेकिन उन के वक्त में घाटा नहीं पड़ा तो अब यह घाटा या तो इन की नेकी की वजह से

पड़ता है या रेलवे बोर्ड की इन के साथ बनती नहीं है और बोर्ड वाले ऐसे नेक आदमी को मिनिस्टर बने नहीं देखना चाहते इसलिए यह घाटा दिखलाया जाता है। मेरी भी श्री स० मो० बनर्जी की राय से राय मिलती है कि बहुत कम मिनिस्टर इस तबियत के देखे हैं जैसे कि हमारे यह पुनाचा साहब हैं। जरूरत इस बात की है कि वह अपने आप को बदलें और रेलवे बोर्ड और रेलवे अफसरान की गलतियों पर परदा न डालें और इस बात की कोशिश करें कि उन की वह गलतियां दूर हों और रेलवे में जो घाटा हुआ वह घाटा न हो क्योंकि घाटा हो ही नहीं सकता। इस के ऊपर गौर करना चाहिए और उस के लिए एक कमेटी बनाई जानी चाहिए कि रेलवेज़ में यह घाटा क्यों हुआ ?

(شری عبدالغنی ڈار (گوڑگاؤں) :
جناب سپیکر صاحب - میں خوش ہوتا اگر ہمارے ریلوے منسٹر صاحب ایسی صورت میں گھاٹا دکھاتے کہ جب پاکستان نے کشمیر میں ہم پر ۱۹۶۰ میں حملہ کیا - تو اس وقت ریلوے کے وہاں نہ ہونے کی وجہ سے بڑے ٹینک نہیں ے جائے جا سکے اور اس میں کافی تکلیف ہوئی - اگر اس طرف دھیان دئے ہوتے اور اس میں روپیہ خرچ ہوتا اور اس کی وجہہ سے گھاٹا ہوا ہوتا - تو میں خوشی سے اس کو قبول کرتا - مدھوک صاحب جیسا کہ کہتے ہیں کہ پھر خطرہ ہے اور اندرا جی نے کل جواب دیا کہ شیخ عبداللہ کے کہنے پر انہیں بڑا رنج ہے - تو پھر جب خطرہ ہے - تو ریلوے منسٹر صاحب کو دیکھ لینا چاہئے کہ آیا وہاں پر ٹینک جا سکینگے یا نہیں - ویسے تو ہماری پرائم منسٹر نے کہہ دیا کہ ہم پہلے سے زیادہ منہہ توڑ جواب دینگے - لیکن باتوں سے تو جواب ہوتا نہیں - کوئی بھی بات نہ ہو کہ مشکل ہمارے سامنے آئے - ہمارے مرحوم پنڈت جی نے کہا تھا کہ دھکے مار کر چینیوں کو نکال دو - لیکن طاقت تو تھی نہیں ہمارے افسر اور سپاہی پیچھے بھاگے - ایک ایک دن میں ساٹھ میل پیچھے آئے - اگر ریلوے منسٹر صاحب اس طرف دیکھیں کہ ملک میں ڈیفینس کے لئے کہاں کہاں بارڈر کے ساتھ ساتھ ریلوے کو بڑھانا ہے - تو میں سمجتا ہوں کہ زیادہ اچھا ہوگا -

**17.05 hrs.**

[MR. DEPUTY SPEAKER *in the Chair*]

دوسری بات میں یہ عرض کرنا چاہتا ہوں کہ ہمارے ریلوے منسٹر صاحب نے — جیسا ایک بھائی نے کہا—کبھی میپ دیکھا نہیں ہوگا - میری کانسٹیچواینسی بالکل دھلی کے ساتھ لگتی ہے - گوڑگاؤں کا نسٹیچواینسی اسے کہتے ہیں - گوڑگاؤں سے لیکر الور تک ۸۰ میل کا ٹکڑا ہے - اس کے باشندوں کو ریلوے کا ایک

[شری عبدالغنی ڈار]

انچ ٹکڑا نصیب نہیں ہوا - انہیں اگر جانا ہوتا ہے- تو ۳۰ میل ایک طرف سٹیشن ہے اور دوسری طرف جو جاتا ہے - تو ادھر بھی ۳۰ میل جانا پڑتا ہے - لیکن کبھی بھی اس طرف توجہہ نہیں دی گئی - بدقسمتی سے وہاں جو لوگ بستے ہیں - وہ بیکورڈ ہیں - مسلمان ہیں - وہ زیادہ شور نہیں کرتے - اس لئے وہ ۸۰ میل کا ٹکڑا اسی طرح پڑا ہوا ہے - اگر اس طرف دھیان دیا گیا ہوتا - تو میں بڑا خوش ہوتا -

ڈپٹی سپیکر صاحب - بڑی بدنصیبی کی یہ بات ہے کہ جب بھی فلڈ آیا - تو اس میں سب سے زیادہ نقصان گوڑگاؤں ضلع کا ہوا - اس کا کارن یہ تھا کہ جو بیچارے مصیبت میں پھنس گئے - ان کے لئے ریل کا کوئی راستہ نہیں اور سڑک کوئی چلتی نہیں - اس لئے وہ بالکل تباہ اور برباد ہو گئے - میں سمجھتا ہوں کہ ریلوے منسٹر صاحب اس طرف ضرور توجہہ دینگے -

ایک بات میں یہاں پر عرض کرنا چاہتا ہوں کہ حصار ضلع میں - جہاں تک خوراک کا مسئلہ ہے - اس میں بہت ہی مددگار ہے - پہلے اس میں سب سے کم پیداوار ہوتی تھی - لیکن اب ہندوستان کے بہترین خطوں میں وہ ایک خطہ سمجھا جاتا ہے -

حصار کے لئے میں نے کئی بار عرض کیا کہ اگر اس کو روھتک کے ساتھ بذریعہ ریل ملا دیا جائے تو وہ سیدھے دھلی سے مل کر ۵۰ میل کا ایریا بڑا مفید ثابت ہوگا - ریواڑی کی طرف سے ریل کے ذریعہ سے قریب ۱۰۰ میل سفر کرنا پڑتا ہے - چاہے غلے کو لانا ہو - یا انسانوں کا آنا جانا ہو - اس میں بھی بڑی آسانی ہو جائے گی -

اب دیکھنا یہ ہے کہ ہم اس بات کے کہنے میں کہاں تک حق بجانب ہیں کہ تھرڈ کلاس کے پیسینجرز پر بوجھا ڈالیں - اگر آپ ان کو کچھ آسانیاں دیتے ہیں - تو پھر تھرڈ کلاس پیسینجرز یہ سمجھ لینگے کہ اب ہمارے ملک میں نہ کوئی فرسٹ کلاس ہے اور نہ کوئی تھرڈ کلاس ہے - کیونکہ جیسے فرسٹ کلاس والوں کو آسانیاں مہیا ہیں - تھرڈ کلاس والوں کو بھی وہی آسانیاں مہیا ہیں - تب وہ یقیناً پناچہ صاحب کے شکر گزار ہونگے اور سمجھینگے کہ دیش میں انقلاب آیا ہے - لیکن سچائی یہ نہیں ہے - سچائی یہ ہے کہ اگر تھرڈ کلاس میں گھسنا ہو تو کافی مشکل پڑ جاتی ہے - اس لئے آپ تھرڈ کلاس والوں کو ایسی آسانیاں دیں کہ وہ آرام سے سفر کر سکیں اور پھر آپ کرایہ بھی بڑھا سکتے ہیں - ورنہ میں آپ کے ذریعہ سے عرض کرنا چاہتا ہوں

که آج کی اس ملک کی اکانومی کو آپ دیکھیں ۔ ہمارا دیش جو دنیا میں سونے کی چڑیا کہلاتا تھا ۔ اس میں دودھ اور شہد کی ندیاں بہتی تھیں ۔ اس کی حالت آج کیا ہے ۔ چھوٹے سے چھوٹا جو کمزور ملک ہے ۔ جیسے که پاکستان ۔ جس میں کوئی انڈسٹری نہیں ۔ ہمارے مقابلے میں وہاں ترقی کے کوئی ذریعے نہیں ۔ اس کی بھی پر کیپیٹا انکم ہمارے مقابلے زیادہ ہے ۔ ایسی صورت میں بھی کیا ہم حق بجانب ہیں که تھرڈ کلاس پیسینجرز پر بوجھا ڈالیں ۔ کسی کو سفر کرنے کا شوق نہیں ہے ۔ ہمارے بزرگوں نے تو شاید ریل دیکھی بھی نہیں تھی ۔ آج تو روٹی روزگار کا مسئله ایسا ٹیڑھا ہو گیا که ہر شخص کو سفر کرنا پڑتا ہے ۔ بھاگ دوڑ کرنی پڑتی ہے ۔ اپنے اور اپنے بچوں کی زندگی کو قائم رکھنے کے لئے وہ مجبوراً سفر کرتا ہے۔ کچھ لوگ شاید سیر کرنے کے لئے سفر کرتے ہوں ۔ لیکن زیادہ تر وہ ہی ہیں ۔ جو روزی کمانے کے لئے جاتے ہیں ۔ دہلی کی کبھی آبادی ساڑھے چار لاکھ تھی ۔ آج تیس لاکھ سے زیادہ ہو گئی ہے ۔ یه کیوں ہو گیا ہے ۔ وجهه یه ہے که یہاں لوگوں کو روزی روٹی ملتی ہے اور دور دور سے لوگ آ کر یہاں بستے چلے جاتے ہیں ۔ لیکن یه بات آپ کو ضرور محسوس ہوگی که دہلی جو که اب دور دور تک پھیل گئی ہے اور ۱۲—۱۲ میل کے فاصلے پر ہم لوگوں نے لوگوں کو آباد کر دیا ہے ان کے لئے ٹرانسپورٹ کی معقول سوویدھا نه ہونے سے انہیں کتنی مشکل ہوتی ہوگی ۔ میں چاہوں گا که ہمارے ریلوے منتری مہودئے اس اور دھیان دیں اور ٹرینوں وغیرہ کی معقول ویوستھا لوگوں کے لئے کریں ۔

جہاں ٹرینوں کی رفتار بڑھانے کے بارے میں سرکار قدم اٹھا رہی ہے وہاں اس کو اس طرف بھی دھیان دینا چاہئے که تھرڈ کلاس کے مسافروں کو ہم ضروری سہولیتیں پہنچائیں ۔ چونکه ابھی تک ہم تھرڈ کلاس کے ریلوے مسافروں کو زیادہ آسانیاں نہیں دے پائے ہیں اس لئے ریلویز کو کوئی حق نہیں ہے که ان کا ریل کا کرائه وہ بڑھائے ۔

ایک مشہور شاعر علامه اقبال نے ہندوستان کے ذہن کی تعریف میں یه کہا ہے ۔

"شکر ہے ترکانی ذہنے
ہندی منطقے ایرانی"

ہندوستان کے ذہن کی تعریف دنیا کے بڑے بڑے لوگوں نے کی ہے اور ساری دنیا مانتی ہے که ہندوستان کے جو بزرگ تھے انہوں نے بہت پہلے یه ہوائی جہاز کہئے ۔ کچھ

[شری عبد الغنی ڈار]

کہئے وہ بھارت کا زمانہ یا مہابھارت کا زمانہ کہئے اس زمانے میں انہوں نے بڑی ترقی کی تھی - لیکن آج جہاں دوسرے ملکوں میں ٹرینوں کی رفتار بہت تیز ہے اپنے دیش میں ٹرینوں کی رفتار بہت کم ہے - اگر کہیں انہوں نے رفتار تیز بھی کی ہے جیسے ڈیلکس گاڑی میں تیز کی ہے جو کہ امرتسر سے بمبئی تک جاتی ہے تو اس میں میں نے خود سفر کیا ہے اور میں اس کی بابت بتلانا چاہتا ہوں کہ وہ دلی سے ۲۵ میل تک تو اتنی تیزی سے آتی ہے کہ تقریباً ایک گھنٹے میں وہ ۴۰ میل سے زیادہ نکال لیتی ہے لیکن سونی پت سے لیکر دلی تک آنے میں اس کی رفتار بہت دھیمی پڑ جاتی ہے اور اس بارے میں اگر وہ اپنے افسران رپورٹ طلب کریں تو ان کو پتہ چلیگا کہ کئی دفعہ ڈیڑھ ڈیڑھ گھنٹہ اس ریل کو صرف اس ۲۷ میل کے ٹکڑے کو طے کرنے میں لگ جاتا ہے - اتنا ٹائم کیوں لگ جاتا ہے - ظاہر ہے کہ اس میں کوئی نہ کوئی مسمینیجمنٹ کی خرابی ہے اور میں چاہتا ہوں کہ منتری مہودئے ادھر دھیان دے کر اس خرابی کو دور کریں -

جہاں میں نے یہ ٹرینوں کی رفتار کے بارے میں منتری جی کا دھیان دلایا ہے وہاں ریلوے بورڈ کی طرف بھی ان کا دھیان دلانا چاہونگا - ریلوے بورڈ ایک بہت بڑی طاقت والا بورڈ ہے - ریلوے بورڈ کی ضرورت ہے یا نہیں یہ پناچا صاحب بہتر جانیں لیکن ہم دیکھتے ہیں کہ آج ان کے ریلوے کے افسران اتنے بینیاز ہو گئے ہیں کہ کچھ کہنا نہیں ہے - دور نہ جا کر یہاں دلی میں ہی آپ دیکھ لیجئے کہ جو گڈس کلرک ہیں کئی تو ۱۲-۱۲ سال سے یہاں لگے ہوئے ہیں کیونکہ یہاں پر اوپر کی آمدنی کا بڑا ذریعہ ہے اور یہ یہیں پر جمے رہنا چاہتے ہیں - انہیں کوئی بدلنے والا نہیں ہے - کئی ریلوے ملازم بڑی پریشانی اور فکر میں ہیں - ان کے ماں باپ - بوڑھے ہوں - اندھے ہوں لولے ہوں - لنگڑے ہوں وہ اپیل پر اپیل کر چکے ہیں لیکن ان کی کوئی سنوائی نہیں ہوتی ہے -

آپ سن کر حیران ہونگے - ایک چھوٹی سی بات میں کہتا ہوں کہ میں نے ریلوے کے منسٹر صاحب کو کہا تھا کہ فلاں ایک بیوا لڑکی ہے اس کو کوارٹر نہیں ملا ہوا ہے اور اسے آؤٹ آف ٹرن پر کوارٹر ملنا چاہئے - مجھے جواب ملا کہ نہیں ایسا نہیں ہو سکتا ہے - ہم چونکہ کسی کو اس طرح نہیں دیتے اس لئے اس کو بھی نہیں دے سکتے

هیں - اب جس بیوا لڑکی کے لئے
میں نے لکھا تھا وہ ایک هندو بیٹی
ہے لیکن انہوں نے کہہ دیا کہ هم
اس کے لئے کچھ نہیں کر سکتے -
اس پر میں نے انہیں دوبارہ لکھا کہ
تین کیسیز میں اس طریقے سے آپ
کے وهاں پر کیا گیا ہے - اس کے بعد
ڈپٹی منسٹر صاحب نے مجھے لکھا کہ
هم اس کے بارے میں غور کرینگے
لیکن ابھی تک وہ غور هی چل رها
ہے اور معاملہ وهیں کا وهیں پڑا
هوا ہے........

اپادهیکش مہودئے : مانئیہ سدسیہ کا سمئے سماپت هو رها ہے -

شری عبدالغنی ڈار : میں آپ کا شکریہ ادا کرتا هوں کہ آپ نے مجھے ٹائم دیا اور میں چونکہ همیشہ چئیر کو اوبے کرتا هوں اس لئے فقط ایک بات کہہ کر میں اپنی جگہ پر بیٹھ جاؤں گا -

میں کہنا چاهتا هوں کہ سوائے ان کی نیکی کے اور کوئی وجہہ اس کے لئے نہیں هو سکتی ہے - بلا شک منتری مہودئے ایک نیک آدمی هیں - پہلے والے ریلوے منسٹرس مثلا پاٹل صاحب اور دیگر منسٹرس هوشیار شخص تھے اور وہ شاید گردن بھی پکڑتے هونگے لیکن ان کے وقت میں گھاٹا نہیں پڑا تو اب یہ گھاٹا یا تو ان کی نیکی کی وجہہ سے پڑتا ہے یا ریلوے بورڈ کی ان کے ساتھ بنتی نہیں ہے اور بورڈ والے ایسے نیک آدمی کو منسٹر بنتے نہیں دیکھنا چاهتے اس لئے یہ گھاٹا دکھلایا جاتا ہے - میری بھی شری بنرجی کی رائے سے رائے ملتی ہے کہ بہت کم منسٹر اس طبیعت کے دیکھے هیں جیسے کہ همارے پناچہ صاحب هیں - ضرورت اس بات کی ہے کہ وہ اپنے آپ کو بدلیں اور ریلوے افسران کی غلطیوں پر پردہ نہ ڈالیں اور اس بات کی کوشش کریں کہ ان کی وہ غلطیاں دور هوں اور ریلوے میں جو گھاٹا هوا وہ گھاٹا نہ هو کیونکہ گھاٹا هو هی نہیں سکتا - اس کے اوپر غور کرنا چاهئے اور اس کے لئے ایک کمیٹی بنائی جانی چاهئے کہ ریلویز میں یہ گھاٹا کیوں هوا -]

SHRI S. M. BANERJEE : Sir, may I know when the Minister is likely to speak?

MR. DEPUTY-SPEAKER : Tomorrow.

---

**17·16 hrs.**

## ARREST AND RELEASE OF MEMBERS

MR. DEPUTY SPEAKER : Now, two Members of the House, Shri S. Kundu and Shri Ram Charan, were arrested but they have been released. The information will be given in the bulletin.

SHRI SAMAR GUHA (Contai) : Sir, this is some sort of insult to the House, to the Speaker, and to the Deputy-Speaker also. They were arrested in Delhi. It takes only just an hour to inform you; they have been arrested and tried and fined and they were kept till the rising of the court and they have now come. Now you are giving the information. I think this thing should not continue in future.